

Sr.	पाठ्यक्रम / Curriculum	पाठ्यवस्तु / Syllabus
6	यह छात्रों की विभिन्न प्रवृत्तियों का विकास करने वाली होती है।	इसमें पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त किसी भी शाखा में प्रवृत्ति का स्थान नहीं होता है।
7	इसका संबंध सम्पूर्ण विद्यालयी कार्यक्रम से होता है।	इसका संबंध कक्षायी कार्यक्रम से होता है।
8	यह बालक के सामाजिक जीवन से संबंधित होती है।	यह केवल पढ़ने का ही आधार है।
9	पाठ्यक्रम में शिक्षा केवल लिखित में ही नहीं दी जाती है बल्कि कुछ अनुशासन, उठने बैठने का ढंग, नैतिकता आदि भी सिखाई जाती है।	पाठ्यचर्या में आपको किताबों का ज्ञान और कई विषयों की जानकारी दी जाती है।
10	यह परीक्षा सीमित नहीं होता।	यह परीक्षा सीमित होता है।

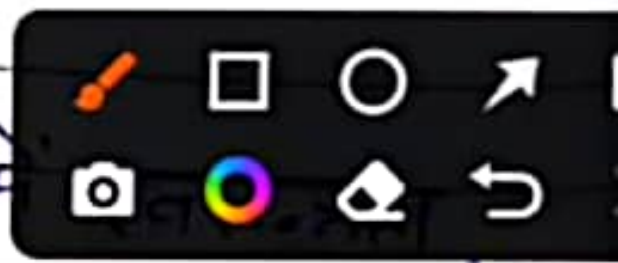
Sr.	पाठ्यक्रम / Curriculum	पाठ्यवस्तु / Syllabus
1	इसका स्वरूप विस्तृत होता है।	यह संकुचित होता है।
2	● यह छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है।	यह केवल बौद्धिक विकास पर बल देता है।
3	पाठ्यक्रम में पाठ्यवस्तु, विद्यालयी गतिविधियां आदि शामिल होता है।	यह पाठ्यक्रम का ही एक हिस्सा होता है।
4	यह छात्रों के कौशलों के उत्थान पर बल देती है।	यह ये बताता है की किसी भी विशिष्ट ग्रेड को प्राप्त करने हेतु कौन से विषय की कितनी जानकारी का होना अनिवार्य है.
5	इसमें विविध प्रकार की क्रियाओं को स्थान दिया जाता है।	इतने केवल मानसिक क्रियाओं को ही स्थान दिया जाता है।

व त्याग आद गुणों का विकास होता है।

(2) धर्मनिरपेक्ष शिक्षा व्यक्ति को गतिशील व अपने स्वार्थों को त्याग कर समाज सेवा में रुचि लेने लगता है। जिसे यह शिक्षा एक मार्गदर्शक का कार्य करता है।

(3) धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के द्वारा कला, विज्ञान, दर्शन, धर्म का विकास में सहायक होता है।

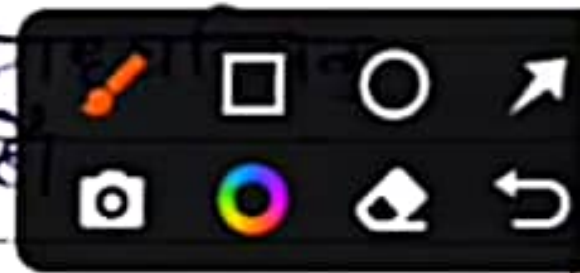
(4) धर्मनिरपेक्ष शिक्षा बालकों में



शिक्षा के द्वारा एक अच्छे राष्ट्र का
निर्माण किया जा सकता है जब तक रह
रहे व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करेंगे।

(2) उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा उपयोगी
वस्तुओं को वास्तविक प्रकृति को
आनन और उपयोग करने तथा वास्तविक
जीवन में रक्षा करने में सहायता करती है।

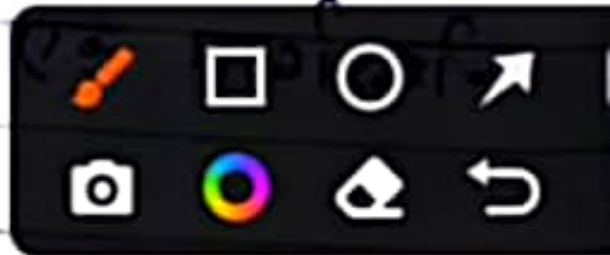
(3) शिक्षा के द्वारा बौद्धिक एवं उ
विकाश शिक्षा के मुख्य उद्देश्य है



शिक्षा से निम्न प्रकार से अन्तर्लम्बित रहता है।

(1) धर्म निरपेक्ष शिक्षा के माध्यम से बालकों में नैतिक दृष्टिकोण का विकास होता है जहाँ इस शिक्षा के माध्यम से उनमें नित्य सहिष्णुता, ईमानदारी, नम्रता, सहानुभूति, मानवता, सेवा व त्याग आदि गुणों का विकास होता है।

(2) धर्म निरपेक्ष शिक्षा व्यक्ति को गतिशील व अपने स्वार्थों को त्याग कर समाज सेवा में रुचि लेने लगता है। जिससे यह शिक्षा का कार्य करता है।

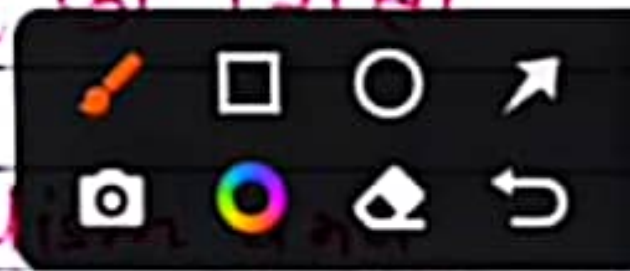


डॉ शशांक कृष्णन् के अनुसार

में अविचारपूर्वक
कहना चाहता हूँ कि धर्मनिरपेक्षता का
अर्थ नास्तिकवाद नहीं है। इसका अर्थ है
हम सभी धर्मों और मतों का आदर करें।
हमारा राज्य किसी एक धर्म से सम्बन्धित
नहीं है।”

* डॉ. अ. के. एन. के अनुसार शब्दवाद का विषय
से अन्तर्सम्बन्ध *

(Interrelationship of National



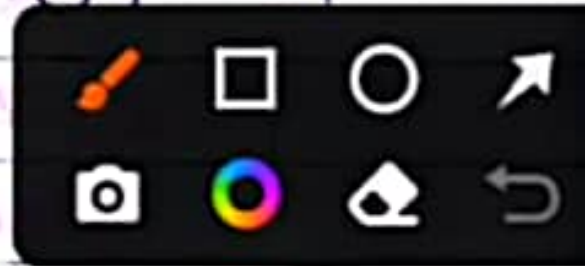
सामनता, आत्मभाव तथा सहयोगी जीवन
में भी सहयोग करती हैं

(5) स्वार्थनिरपेक्ष शिक्षा व्यक्ति में न केवल अतिबु
झांगी एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए
प्रयत्नशील बनाती है बल्कि मूल्यों को ग्रहण
करने और उन्हें व्यवहार पर बल देती है।

10. यह शिक्षा बच्चों में सही स्वार्थ के प्रति

धर्म निरपेक्षता की विचारधारा

उच्च तथा श्रेष्ठ विचारवान मनुष्यों में पाया जाता है। जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के धार्मिक विचारों, मूल्यों और विश्वासों को सहन करता है और उनका बिना किसी भेदभाव के सम्मान करता है तो इन प्रकार की विचारधारा को धर्म निरपेक्षवाद विचारधारा कहा जाता है। जब ही मानव सभ्यता का उदय हुआ तभी से प्रेम, स्नेह, दया, सहयोग और सहनशीलता के रूप में धर्मनिरपेक्षता शुरु हो गया।



वन्दनाय द्वारक अनुसार राष्ट्रवाद आरथमानरपक्षका लय, परा, ॥

ssion One Way भाषा, आतीय या आतिकाद और सांस्कृतिव
के आधार पर एकजुट मानते हैं। राष्ट्रवाद
एक ऐसी भावना है जो देश के प्रति
सम्पण, त्याग और बलिदान प्रकट करती
है, समाज के हर लोगों की वर्गों की
रक्षा करना एवं उनकी मदद करना ही
राष्ट्रवाद है। देश को मंदिर, मस्जिद, चर्च

0:46

* राष्ट्रवाद का अर्थ *

(Meaning of Nationalism)

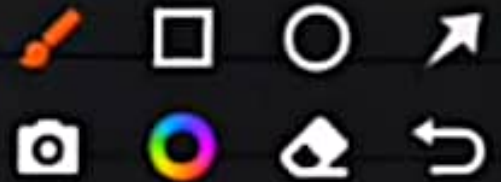
राष्ट्रवाद का अर्थ होता है -
राष्ट्र के प्रति लगाव की भावना।

इस प्रकार राष्ट्रवाद जो किसी विंगैव आंगौलिक, सांस्कृतिक या सामाजिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों में एकता की भावना है। सामान्य अ राष्ट्रवाद एक आंगौलिक सीमा में समुदायों के बीच राजनैतिक आ

* परिभाषाएं (Definitions) *

प्रो. एल. के. दुबे के अनुसार

“ शतृवाद से तात्पर्य नागरिकों में शत्रु के प्रति सम्पत्ति के भाव, अविश्वास, शक्यता, सम्पन्नता एवं सम्मान की रक्षा एवं उनके विकास हेतु योगदान देने की भावनाओं से है। ”



* धर्म निरपेक्षवाद का अर्थ *

(Meaning of Secularism)

धर्म निरपेक्षता अंग्रेजी के Secularism शब्द का हिन्दी रूपान्तर है धर्म निरपेक्षवाद का शाब्दिक अर्थ है - बिना किसी धर्म के आधार पर निर्णय लेना और कार्य करना।

धर्म निरपेक्षता की विचारधारा उच्च तथा श्रेष्ठ विचारवान मनुष्यों में पाया जाता है। जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के धार्मिक विचारों, मूल्यों और विश्वासों को सहन करता है और उनका बिना किसी

* परिभाषाएँ (Definitions) *

धर्म निरपेक्षता की परिभाषाएँ निम्न प्रकार हैं:-

१^० - यॉम्बर्ट डाल्टकोष के अनुसार

“धर्म निरपेक्षता वह विश्वास है जो राज्य, नैतिकता, शिक्षा आदि को धर्म से स्वतन्त्र रखता है।”

में भी सहयोग करती हैं।

(5) धर्मनिरपेक्ष शिक्षा व्यक्ति में न केवल मौखिक मांगों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बनाती है बल्कि मूल्यों को ग्रहण करने और उन्हें व्यवहार पर बल देती है।

(6) यह शिक्षा बालकों में सभी धर्मों के प्रति सम्मानता एवं मानव मात्र के प्रति सम्मान के भाव आगत करती है तथा बालकों में प्रेम, आत्मत्याग उत्पन्न करती है।

* निष्कर्ष / (Conclusion) *

सांस्कृतिक एकता की भावना से संबंधित हैं

शहरवाद का उदय
18वीं व 19वीं शताब्दी के मध्य यूरोप में
हुआ था। तभी से यह विचार शक्तिशाली
व विकसित बना हुआ है। शहरवाद लोगों की
किसी समूह की उस आस्था का नाम है, जिससे
नहत वे खुद को साझा इतिहास, परंपरा,
भाषा, आतीय या आतिवाद और सांस्कृतिक
के आधार पर एकजुट मानते हैं। शहरवाद
एक ऐसी भावना है जो देश के प्रति
सम्पन्न, त्याग और बलिदान प्रकट करती
है, समाज के हर लोगों की कर्तव्य की।